क्या समुदाय और पालक सचमुच गैर-ज़िम्मेदार हैं?

एक अनुभव

यशोदा विश्वास

सृजन समूह से जुड़कर आलेख पढ़ने, चर्चा का हिस्सा बनने के साथ ही साथी शिक्षकों से सीखने के मौके मिलते रहे हैं। साप्ताहिक चर्चा में स्कूल की परिस्थितियों से लेखों को जोड़कर कक्षा अनुभवों को साझा किया जाता है। साथ ही, सटीक सवाल पूछे जाते हैं जिससे सभी अपने अनुभवों पर विचार कर सकें। एक साप्ताहिक चर्चा के दौरान यह समस्या निकलकर आई कि बच्चे स्कूल कम आते हैं और वे स्कूल में रुचि भी नहीं लेते हैं। इस विषय पर समूह के शिक्षकों ने अपने अनुभव रखे और कहा कि बच्चे और अभिभावकों को लगता है कि स्कूल में पढ़ाई नहीं होती है। बच्चे स्कूल चले जाते हैं और बिना पढ़े ही वापस आ जाते हैं। बच्चों को स्कूल में पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में रुचिपूर्ण ढंग से व्यस्त रखने और समुदाय के साथ बेहतर रिश्ता बनाने से बच्चों की उपस्थिति बढ़ती है। यह बात मुझे सही लगी। बच्चों को फिर से स्कूल की ओर मोड़ने के लिए मैंने उनके घर जाकर सम्पर्क किया ताकि बच्चों एवं समुदाय के साथ संवाद कायम किया जा सके।

मेरा स्कूल जिस गाँव में स्थित है वहाँ मुस्लिम बाहुल्य आबादी है। कुछ अन्य धर्मों के लोग भी यहाँ निवास करते हैं। इस गाँव के लोग अलग-अलग पेशे से जुड़े हुए हैं। कुछ काश्तकारी, मज़दूरी, स्वयं का व्यवसाय आदि करते हैं। गाँव में सबकी आर्थिक स्थिति एक-जैसी नहीं है। हमारे स्कूल में आने वाले ज़्यादातर बच्चे मज़दूर तबके के हैं जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। जिन परिवारों के पास संसाधन हैं या थोड़े पैसे हैं, वे अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेजते हैं। मैं चौथी कक्षा को पढ़ाती हूँ और मेरी कक्षा में 36 बच्चे नामांकित हैं।

19 फरवरी 2022

ठण्ड का मौसम था। शनिवार का दिन, स्कूल शुरू होने का समय 9:30 बजे का था और 10:30 बज चुके थे। कक्षा में केवल एक बच्ची आई थी, कुछ समय बाद दूसरी बच्ची को फोन करके बुलाया। कुछ बच्चों से फोन

बन्द होने के कारण बात नहीं हो पाई, तो कुछ के फोन उनके पिता या बड़े भाई के पास थे। किसी भी प्रकार से मैं उनसे जुड़ नहीं पा रही थी। पूरी कक्षा में दो ही बच्चे थे, दोनों का कहना था कि बाकी सभी बच्चे मटर तोड़ने जाते हैं इसलिए वे अनुपस्थित हैं। कक्षा में उपस्थित दोनों बच्चे मटर तोड़ने नहीं जाते। मैंने बच्चों से पूछा, "क्या तुम्हें उन सबका घर पता है?" बच्चों ने हामी भरी। मैंने प्रधानाध्यापक महोदय से अनुमति ली और दोनों बच्चों के साथ गाँव में अन्य बच्चों के घरों की ओर चल पड़ी ताकि बच्चों के स्कूल न आने का करण पता चल सके।

समुदाय भ्रमण

गाँव के लोग घर से बाहर आकर पूछ रहे थे, "भई, आज क्या हो गया?" इसका जवाब मेरे साथ चल रहे दोनों बच्चे खुद ही खुश होकर दे रहे थे कि "मैडम आज उन सभी बच्चों के घर जाएँगी जो स्कूल नहीं आते हैं।" कुछ बड़े-बुज़ुर्ग हमें रोककर कह रहे थे, "यह आपने बहुत अच्छा

किया, बच्चों में डर बना रहता है कि यदि स्कूल नहीं गए तो मैडम घर आ जाएँगी। अब तो सरकारी स्कूल बहुत अच्छा हो गया है।"

सबसे पहले हम हुमाबी के घर गए। एक दिन पहले ही मेरी उसकी मम्मी से फोन पर बात हुई थी। हुमा लगभग चार महीने से स्कूल नहीं आ रही थी। इस सम्बन्ध में उसकी मम्मी ने कहा कि "मैडम, हम हॉस्पिटल में थे क्योंकि उसके नाना की तबियत ठीक नहीं थी। हम कल ही घर पहुँचे हैं।" घर पहुँचने पर देखा कि हुमा कपड़े धो रही है और मुझे देखते ही शरमा गई और कहने लगी, "मैडम, मैं तो कल रात ही आई हूँ।" मैंने कहा, "कोई बात नहीं, कपड़े मम्मी धो लेंगी, तुम अभी मेरे साथ स्कूल चलो।" मैं इन्तज़ार करने लगी और वह तैयार होकर मेरे साथ स्कूल चल दी।

फिर हम गुलिस्ताँ के घर गए। उसकी मम्मी गोबर के कण्डे थाप रही थीं और गुलिस्ताँ मटर तोड़ने गई हुई थी। पूछने पर उसकी मम्मी ने आश्चर्य से पूछा, "दीदी, आज स्कूल बन्द नहीं है क्या? बच्चे तो बता रहे थे कि आज स्कूल बन्द है, तभी वह मटर तोड़ने चली गई और उसके साथ उसकी छोटी बहनें भी गई हैं।" फिर उन्होंने आगे कहा, "मेरी बेटी की पढ़ने-लिखने में बहुत दिलचस्पी है, वह कभी छुट्टी नहीं करना चाहती है। मुझे लगा कि आज उसकी छुट्टी है तभी दोनों बच्चों को पास के खेत में मटर तोड़ने भेज दिया।" उन्होंने यह भी कहा कि अब से वे बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजेंगी।

फिर मैं गुलफिज़ा के घर गई। तभी वह खेतों की तरफ से दौड़ती हुई आई और तैयार होकर स्कूल के लिए चल दी। गुलफिज़ा पढ़ने-लिखने में अच्छी है। पहले वह ग्रेट इण्डियन पब्लिक स्कूल में पढ़ती थी, सितम्बर के महीने से हमारे स्कूल में दाखिला लिया है।

मटर तोड़ें या स्कूल जाएँ?

इसके बाद हम इकरा के घर गए। इकरा पड़ोस में खेलने गई थी। उसकी मम्मी से कहकर उसे बुलवाया। वह मुझे देखकर खुश हो गई और बोली, "मैडम, बच्चे तो कह रहे थे कि आज छुट्टी है!" शायद वह अपने बचाव के लिए सफाई दे रही थी, इसलिए मैंने उससे कहा, "तुम तो मुझसे फोन करके पूछती रहती हो, तो एक बार फोन करके ही पूछ लेती।"

मैंने इन सभी बच्चों को स्कूल भेज दिया और आगे रुखसार और रियाज़ के घर गई। घर में उनके पापा थे। मम्मी कहीं आसपास गई थीं। सो मैंने उनके पिताजी से ही पूछ लिया, "रुखसार कहाँ है?" उन्होंने कहा, "वह तो स्कूल गई है।" इस पर मैंने कहा, "वह तो स्कूल में नहीं है और

कई दिनों से स्कूल नहीं आ रही है, तभी तो घर देखने आई हूँ। पड़ोस के लड़के कह रहे थे कि वे सब मटर तोड़ने जाते हैं और रोज़ाना जाते हैं।" इन बातों के बारे में रुखसार के पिताजी को पता नहीं था क्योंकि वे काम के सिलसिले में अकसर बाहर ही रहते हैं। उसकी मम्मी बच्चों को उनकी बड़ी मम्मी के साथ मटर तोड़ने भेज देती हैं। उन्होंने कहा, "मैडम, आगे से ऐसा नहीं होगा, वादा करता हूँ।" मैं जहाँ भी जा रही थी, बड़े और बुज़ुर्ग भीड़ लगा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे मदारी कोई खेल दिखा रहा हो।

आरिश के घर गई, वहाँ ताला लगा हुआ था। आस-पड़ोस से पूछने पर पता चला कि सभी लोग मटर तोड़ने गए हैं। उनसे मिलना मुमकिन नहीं है क्योंकि वे सुबह जाते हैं और शाम को आते हैं। आरिश का घर एक कमरे का था, आगे थोड़ा बरामदा बना हुआ था। दीवारों में दरारें पड़ी थीं और दरवाज़ा भी लकड़ी का नहीं था। बाहर एक चूल्हा बना हुआ था और पास में कुछ घास-फूस और लकड़ियाँ इकट्ठा करके रखी थीं। ऐसा लग रहा था कि यदि बारिश हो गई तो रात का खाना बनाना भी मुश्किल हो जाएगा। वैसे आरिश पढ़ने-लिखने में ठीक है, साथ ही ज़िम्मेदारी का भाव भी प्रदर्शित करता है। उसके मम्मी-पापा एक-दूसरे से अलग रहते हैं। जब वह कक्षा-2 में पढ़ता था तब उसके पापा उसे स्कूल से दो-तीन बार उठाकर भी ले गए थे। आरिश की मम्मी आर्थिक और मानसिक रूप से परेशान और बदहाल रहती हैं। उनकी स्थिति बहुत दयनीय है। आरिफ, तफसीर, आदिव, शानूमबी, अंजुम, सायबा, फिज़ा, फारुख अली, अनम, जुलेखा, मैसबीन – ये सभी मटर तोड़ने गए हैं। किसी के घर में ताला लगा हुआ है तो किसी के घर में बुज़ुर्ग ही मिले।

21 फरवरी 2022

सोमवार के दिन अधिकतर बच्चे समय से स्कूल आ गए थे। जिनके घर में ताला लगा हुआ था, वे भी आए थे। कुछ बच्चे अभी भी स्कूल नहीं आए, उनके घर जाने का भी कोई फायदा नहीं हुआ। जो बच्चे स्कूल में उपस्थित थे, उनके साथ बात की गई। फारुख ने बताया कि मटर तोड़कर उसने 4000 रुपए कमाए हैं। उनके परिवार ने कोविड के कारण पिछले छह महीने से मकान का किराया नहीं दिया है। इसके अलावा कुण्डे के त्योहार* पर खर्च के लिए 150 रुपए घर पर दिए हैं।

रुखसार और रियाज़, दोनों भाई-बहन हैं। उन्होंने बताया, "मैडम, दो बोरी मटर तोड़ने से दो सौ रुपए मिल जाते हैं। हम अपनी बड़ी मम्मी के साथ मटर तोड़ने जाते हैं। हमें पचास रुपया मिलता है जिसे हम अपनी मम्मी को दे देते हैं।"

23 फरवरी 2022

आज एक बार फिर मैं प्रीती और आँचल के घर गई। वहाँ उनकी दादी, मामा, मामी, मम्मी, दीदी से मिली। उनसे बच्चों के स्कूल न आने का कारण जानना चाहा कि कहीं उनके मन में स्कूल की प्रक्रियाओं एवं पढ़ाई-लिखाई से सम्बन्धित कोई सवाल तो नहीं है। सभी लोग एक सुर में बोले, "मैडम, आजकल तो अपने स्कूल में प्राइवेट से भी बढ़िया पढ़ाई हो रही है। हमें लेबर नहीं मिल रहे हैं इसलिए हमने बच्चों को घर पर ही रोक लिया है।" आँचल और प्रीती ने अगस्त माह में हमारे स्कूल में दाखिला लिया था। इससे पहले वे प्रायवेट स्कूल में पढ़ती थीं। लॉकडाउन के कारण उनका स्कूल बन्द हो गया था।

24 फरवरी 2022

गुलफिज़ा ने बताया कि "मटर तोड़कर 2100 रुपए मिले जिससे कुण्डे के लिए बाज़ार से खरीददारी की। थोड़े पैसे रख दिए हैं, उससे मामा की बारात के समय नए कपड़े खरीदेंगे। हम पैसे इकट्ठे करके अम्मी को दे देते हैं। जब हमारे घर में कोई परेशानी होती है तब उन पैसों से अम्मी को घर चलाने में मदद मिल जाती है।"

26 फरवरी 2022

फिज़ा और अनम का कहना है, "मैडम, हमें स्कूल आना अच्छा लगता है लेकिन मम्मी कहती हैं कि कुछ दिन मटर तोड़ लो, फिर स्कूल चली जाना।" दोनों ही बच्चे पढ़ने में ठीक हैं। अनम डांस भी अच्छा कर लेती है।

4 मार्च 2022

जुलेखा और मैसबीन, दोनों बहनें

* *कुण्डे का पर्व हज़रत इमाम जाफर सादिक रह. अलैह की याद में मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन खीर-पूड़ी बनाकर कुण्डे में रखकर माँगी गई मुराद पूरी होती है।*

हैं। इनका कहना है, "मम्मी कहती हैं कि मटर का सीज़न तीन महीने का होता है, अभी मटर तोड़ने का काम करो बाकी फिर सालभर तो स्कूल ही जाना है। हमारा मकान कच्चा है। जब मटर तोड़ने के पैसे मिलेंगे तब हम ईंटें खरीदेंगे।" इनके पापा टुक-टुक चलाते हैं। एक्सीडेंट के कारण उनकी टाँग टूट गई थी तब उनकी पत्नी और बच्चे कढ़ाई का काम करके अपना परिवार चलाते थे।

एक बार फिर आरिश के घर गई। हमेशा की तरह उनके दरवाज़े पर ताला मिला। मैंने फोन पर उसकी मम्मी से बात करने की कोशिश की लेकिन उनसे भी बात नहीं हो पाई।

समुदाय सम्पर्क से बनी समझ

अब बच्चे फिर से स्कूल आने लगे हैं। उनकी वार्षिक परीक्षा हुई। उत्तर पुस्तिकाएँ देखकर लगा जैसे मैंने जंग जीत ली है। इस सर्वे और सम्पर्क से समझ में आया कि ज़्यादातर बच्चे अपने परिवार के प्रति संवेदनशील हैं और अपनी तरफ से मदद कर रहे हैं। परन्तु यह भी सही है कि इस कारण उनकी पढ़ाई बाधित होती है।

इस सामुदायिक सम्पर्क के पहले लगता था कि बच्चे और उनके परिवार के लोग कितने गैर-ज़िम्मेदार हैं। हम शायद एक पक्ष ही देख रहे थे और दूसरा पक्ष हमसे एकदम अछूता रह जाता था। एक शिक्षक को बच्चों के आर्थिक-सामाजिक पक्ष को भी समझना ज़रूरी है। स्कूल और समुदाय के बीच जुड़ाव बना रहना चाहिए जिससे हम समुदाय को समझ सकें और समुदाय का स्कूल के प्रति विश्वास बना रहे।

यशोदा विश्वास: राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कुरैय्या, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका। बच्चों को रचनात्मक व कलात्मक ढंग से पढ़ाना पसन्द है। जीवनी, आत्मकथा, जीवन वृत्तान्त पढ़ने में रुचि।

सभी चित्र: बंसी: जूनागढ़ की रहने वाली बंसी ने गांधीनगर से दाँतों की शल्य चिकित्सा की पढ़ाई करने के बाद TISS, मुम्बई से प्रारम्भिक शिक्षा में एम.ए. की पढ़ाई की। वह एक चित्रकार बनना चाहती हैं और संवेदनशील एवं अर्थपूर्ण बाल साहित्य की रचना करना चाहती हैं - खासकर गुजरात की गैर-अधिसूचित और 'बोली' भाषाओं में। वर्तमान में *एकलव्य* के साथ जुड़ी हैं।